(Pages : 6) **J – 4037**

Reg. No. : .....

Name : .....

Second Semester M.A. Degree Examination, May 2020

HINDI

HL 221 : MEDIEVAL POETRY : BHAKTHI PERIOD

(2015 Admission Onwards)

Time : 3 Hours Max. Marks : 75

I. सही उत्तर चुनकर लिखिए।

1. 'जायसी ग्रन्थावली' – का संपादक कौन है?

   (अ) हज़ारी प्रसाद द्विवेदी (आ) मैथिली शरण गुप्त

   (इ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ई) डॉ. ग्रियर्सन

2. सूर पंचरत्न में पाँचवाँ रत्न क्या है?

   (अ) विनय (आ) रूपमाधुरी

   (इ) मुरली माधुरी (ई) भ्रमरगीत

3. निम्नलिखित रचनाओं में सूरदास की रचना कौन सी है?

   (अ) रामचन्द्रिका (आ) रमणी

   (इ) साहित्य लहरी (ई) रूपमाधुरी

4. 'जानकी मंगल' – का रचयिता कौन है

   (अ) कबीर (आ) सूर

   (इ) तुलसी (ई) जायसी

P.T.O.

gcwcentrallibrary.in

5. 'हरि अपने आँगन कछु गावत' – किस पदावली की पंक्ति है?

(अ) बाल लील (आ) बृन्दावन लील

(इ) गोपी वचन (ई) उद्धव–सन्देश

6. हिन्दी काव्य का आदिकाल कब शुरू होता है?

(अ) 1150 (आ) 1065

(इ) 1165 (ई) 1050

7. कबीर के गुरु कौन थे?

(अ) रामानन्द (आ) नन्ददास

(इ) बाणभट्ट (ई) रैदास

8. आदिकाल को 'सिद्धसामन्तकाल' के नाम से किसने विशेषित किया है?

(अ) रामकुमार वर्मा (आ) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

(इ) राहुल सांकृत्यायन (ई) मिश्रबन्धु

9. 'ऊधो ब्रज में पैठ करी' – किसकी पंक्ति है?

(अ) जायसी (आ) सूरदास

(इ) कबीरदास (ई) तुलसीदास

10. इनमें से रामरतन भटनागर की रचना कौन सी है?

(अ) कबीर साहित्य की भूमिका (आ) व्रजभाषा व्याकरण

(इ) छायावाद और रहस्यवाद (ई) सूर साहित्य की भूमिका

(10 × 1 = 10 Marks)

gcwcentrallibrary.in

II. किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के लघु उत्तर लिखिए।

1. तुलसी और रामकाव्य।

2. नागमति विरह।

3. कबीर की भक्ति।

4. सूर का वात्सल्य वर्णन।

5. जायसी का विरह–वर्णन।

6. सन्त कवि कबीर।

7. तुलसी की भक्ति–भावना।

8. जायसी का प्रेम काव्य।

(5 × 5 = 25 Marks)

III. किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. कबीर के निर्गुण भक्ति–भाव का विश्लेषण कीजिए।

2. सूर की भक्ति की विशेषता पर एक लेख लिखिए।

3. तुलसी के काव्य–सौष्ठव का विश्लेषण कीजिए।

4. जायसी और पद्मावत की काव्य शैली का उल्लेख कीजिए।

(2 × 10 = 20 Marks)

gcwcentrallibrary.in

IV. सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. कबीर चन्दन के बिडै बेधे ढाक पलास।

आपु सरीखे करि लिए जे होते उन पास।।

सन्त न छांडै संतई जो कोटिक मिलहि असन्त।

मलय भुयंगम बेढिओ (तऊ) सीतलता न तजंत।।

मेरै संगी दोइ जनां एक बैस्नौ एक रांम

वो है दाता सुकुति का वो सुमिरावै रांम।।

अथवा

राम भजा सोई जीता जग मैं

नाम भजा सोइ जीता रे।। टेक।।

हाथ सुमिरनी पेट कतरनी पढै भागवत गीता रै।

हिरदै शुद्ध किया नहि बोरै कहत सुनत दिन बीता रै।।

आन देव की पूजा कीन्हो हरि से रहा अमीत्र रै।

धन जोवन तेरा यहीं रहैगा अन्त समय चलि रीता रै।।

2. अब के माधव मोहि उधारि।

मगन हौ भवअंबुनिधि में कृपा सिन्धु मुरारि।।

नीर अति गम्भीर माया, लोभ लहरि तरंग।

लिए जात अगाध जल में गहे ग्रह अनंग।।

मोत इन्द्रिय काटत मोट अध सिर भार।

पग न इत उत परत पावन उरझि मोह सेवर।।

अथवा

gcwcentrallibrary.in

अब हो कहौ कौन दर जाऊँ।

तुम जनुपाल चतुर चिन्तामनि दीनबन्धु सुनि नाऊ।

माया कपट रूप कौरव बल लोभ मोह मद भारि।

परवस परी सुनहु करुनामय मम–मति पतिव्रतधारी।

3. चढा असाढ, गगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।

घूम साम घोरै धन धाए। सेत घजा बगपॉति देखाए।

खडगा बीजु चमकै चहुँ ओरा। बुन्द बाण बरसहि धन घोरा

ओनई घटा, आइ चहु फेरी, कंत उबारु मदन हौ घेरी।

दादुर मोर कोकिला, पीऊ। गिरै बीजु घट रहै न जीऊ।

अथवा

मुदित महीपती मंदिर आए सेवक सचिव सुमंत्रु बोलाए।

कहि जयजीव सीस तिन्ह नाए भूप सुमंगल बचन सुनाए

जैं पॉचहि मत लागै नाका। करह हरषि हिय रामहि टीका

मंत्री मदित सुनत प्रिय बानी, अभिमत बिखै पेरठ जनु पानी

विनता सचित करहि कर जोरि, जिअहु जगतपति बरिस करोरि

gcwcentrallibrary.in

4. नंदराइ के नवनिधि आई।

माथे मुकुट स्रवण मनि कुण्डल प्रीत बसन भुज चारि सुहाई।।

बाजत ताल मृदंग जंग गति सुरुचि अरगज अंग चढाई।

अच्छत दूब लिये सिर वंदत घर घर बंदनवर बधाई

अथवा

जसोदा मदन गुपाल सुवावै

देखि सपन गत त्रिभुवन कंज्यो ईस विरंचि भ्रमावै

असित अरुण सित आलस लोचन, उभै पल पर आवै

जनु रवि गत संकुचित कमल युग निसि अलि उडन न पावै

(4 × 5 = 20 Marks)

gcwcentrallibrary.in